गीत

सुरेन्द्र 'सीकर'

संचयन करो, जल संचयन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
तालों में, झीलों में, पोखरों में, टीलो में
थोड़े-थोड़े अंतराल, फलाँगों, मीलों में
जल के संरक्षण-हित, उत्खनन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
जल ही जीवन है या, जल से ही जीवन है
दोनों उक्तियां हैं एक, फिर कैसा विभ्रम है?
जल विहीन जीवन का, आंकलन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
यदि नहीं रहेगा जल, विश्व सकल जाये जल
अगले विश्वयुद्ध हेतु, कारक बन जाये जल
जल की योजनाओं का, उन्नयन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
यह जल अति निर्मल है, जीवन की हलचल है
साँसों के तारों का, यह जल ही संबल है
इस प्रकृति की सम्पदा, का उपनयन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
जल बिन आखिर! प्राणी! कैसे रह पायेगा?
सकल सृष्टि में कैसे, जीवन बच पायेगा
शुद्ध, संघनित है जल, ये संकलन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।
आप सब की भावी पीढ़ियां, कृतज्ञ होयेंगी
चैन की साँसे लेंगी, सुख की नींद सोयेंगी
पंचतत्व घटक जल है, अध्ययन करो
वर्षा का आसुत जल, संचयन करो।

ओ नदी! तू रेत में क्यों छुप गयी?
तेरी शीतल छाँव को क्या हो गया?
तेरी लहरें लुप्त आखिर क्यों हुई
तेरी चंचल धार को क्या हो गया
तेरे अल्हड़पन को क्यों दीमक लगा
क्यों तेरा अस्तित्व निर्मल खो गया
दलदले कीचड़ में क्यों रच-बस गयी
तेरी द्रुत गति, चाल को क्या हो गया?
सब चरिन्दे औं परिन्दे हैं विकल
रूठ बैठी है तू आखिरकार क्यों
नित्य तट पर आ रहे आशान्वित
प्राणियों को कर दिया लाचार क्यों
कौन-से जंजाल में तू फँस गयी
धमनियों को तेरी यह क्या हो गया
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ?
दोष दूँ, आरोप किस-किस पर मढ़ूँ
इतना दोहन और शोषण हो चुका
अति प्रदूषित मैं भला किससे लड़ूँ
शर्म से मैं ही धरा में धँस गयी
खेदयुत तन सूख काँटा हो गया
अब पुनः मुझको धरा पर चाहो यदि
महत समझो मेरा, दो सम्मान यदि
मेरी गरिमामय निरंतर स्वच्छता
रख सको, रखो प्रदूषण-मुक्त यदि
गर्भ में मैं धरती माँ के बस गयी
आऊँ यदि उद्धार का लो प्रण नया।

संपर्क करें:
सुरेन्द्र 'सीकर'
43, नौबस्ता, हमीरपुर रोड
कानपुर-208021 (उत्तर प्रदेश)
मो.9451287368